उस दिन अचानक...

गोल्ड रे का फ्लॉरिडा से
युकाटन तक का छमाही प्रवास

जून माह की बात है। मैं वहाँ व्हेल शार्क देखने गई थी। एक जहाज़ के डेक पर खड़े-खड़े अचानक मैंने जो देखा उसे बताना बड़ा ही मुश्किल है। लगा, जैसे मैं कोई पेंटिंग देख रही हूँ। लगा, जैसे पेड़ों से झड़ी हज़ारों बड़ी-बड़ी पत्तियाँ पानी में धीमे-धीमे बहती जा रही हों।

हम उनसे घिरे थे। उनका न कोई ओर, न छोर नज़र आ रहा था। असल में यह था गोल्डन रे मछलियों का प्रवास। साल में दो दफा ये मैक्सिको की खाड़ी से बड़े-बड़े झुण्डों में प्रवास करती हैं। लगभग दस हज़ार-दस हज़ार के झुण्डों में ये पश्चिमी फलॉरिडा से युकाटन तक का सफर तय करती हैं। पानी की सतह के नीचे तैरती मछलियों ने नीले समन्दर को पीला बना दिया था। मैं खुशकिस्मत थी कि सही समय पर और सही जगह पर थी। तभी तो कुदरत के इस बेहतरीन नज़ारे को देख पाई।

गोल्डन रे मछली को सामान्य तौर पर काउ-नोज़ रे (गाय की नाक) भी कहा जाता है। उनके डैने लम्बे, नुकीले होते हैं। दो डैनों के बीच की दूरी लगभग 7 फीट होती है। उनके उभरे हुए से सिर पर दो गोल गूमड़ होने के कारण वे गाय जैसे लगती हैं। ज़हरीले डंक होने के बावजूद झुण्ड में इनका व्यवहार काफी विनम्र होता है।

(युकाटन प्रायद्वीप के उत्तरी छोर पर फोटोग्राफर सान्द्रा क्रिटली ने एक दिन अचानक खुद को हज़ारों गोल्डन रे मछलियों से घिरा पाया।)